राज्यपाल सचिवालय, बिहार
(जन–सम्पर्क शाखा)
राजभवन, पटना–800022

ई–मेल–**pr.rajbhavan@gmail.com**
prrajbhavanbihar@gmail.com
मोबाईल–9431283596

प्रेस–विज्ञप्ति

राज्यपाल ने राजभवन में आयोजित 'उद्यान प्रदर्शनी' का उद्घाटन किया

पटना, 14 फरवरी 2020

''देश के विकास में कृषि एवं कृषि के अनुषंगी क्षेत्रों का महत्वपूर्ण योगदान है। देश की आर्थिक व सामाजिक प्रगति इसी पर निर्भर है। कृषि एवं इसके अनुषंगी क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था के प्राण तत्व हैं। देश की एक चौथाई राष्ट्रीय आय, कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों से ही प्राप्त होती है। देश के कुल निर्यात मे 16 प्रतिशत हिस्सा कृषि से ही प्राप्त होता है।''–उक्त उद्‌गार महामहिम राज्यपाल श्री फागू चौहान ने राजभवन परिसर स्थित राजेन्द्र मंडप में बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर के द्वारा संयोजित 'उद्यान प्रदर्शनी' का उद्‌घाटन करते हुए व्यक्त किये।

राज्यपाल श्री चौहान ने कहा कि परंपरागत खेती से हटकर किसानों को मधुमक्खी–पालन, मुर्गीपालन, मशरूम, फल–फूल तथा सुगंधित एवं औषधीय पौधों के उत्पादन, बकरी–पालन और गो–पालन जैसे कृषि आधारित उद्योगों से जुड़ना होगा। उन्होंने कहा कि गो–पालन एक लाभदायक व्यवसाय है। विशेषकर देशी गायों का दूध, गोबर और गोमूत्र–तीनों ही उपयोगी हैं।

राज्यपाल ने कहा कि बिहार राज्य की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है। बिहार–विभाजन के बाद अधिकांश खनिज संपदा झारखंड के ही हिस्से में चली गई, फलतः बिहार का विकास मूल रूप से कृषि पर ही अवलंबित हो गया। राज्य विभाजन के बाद बिहार ने काफी कुशलतापूर्वक अपनी अर्थव्यवस्था को सँभाला एवं विकास–प्रयासों को गति दी। राज्यपाल श्री चौहान ने कहा कि आज बिहार की विकास–दर देश की विकास–दर से भी अधिक 15 प्रतिशत है। निश्चय ही यह राज्य के ठोस विकास–प्रयासों और कुशल वित्तीय प्रबंधन का परिचायक है। उन्होंने कहा कि विकास–दर में कृषि प्रक्षेत्र का योगदान बढ़े– अब इस दिशा में भी सोचने का समय आ गया है।

राज्यपाल ने कहा कि आज राजभवन में 'उद्यान प्रदर्शनी' आयोजित करते हुए राज्य के किसानों को सम्मानित करने का निर्णय लिया गया है। उन्होंने कहा कि राजभवन को आम जनता के लिए खोलने की भी शुरूआत आज के इस आयोजन के माध्यम से कर दी गई है। ऐसे आयोजन आगे भी जारी रहेंगे, जिनमें जन–भागीदारी देखने को मिलेगी।

राज्यपाल ने कहा कि किसानों को उनकी जमीन की उत्पादकता बढ़ाने में मदद के लिए 'स्वायल हैल्थ कार्ड स्कीम' शुरू की गई है। समेकित कृषि–प्रणाली के जरिये किसानों की वार्षिक आय में लगभग 40 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। बिहार राज्य में दो हजार से अधिक किसानों ने समेकित कृषि–प्रणाली को अपनाया है, जिससे उन्हें प्रति हेक्टेयर प्रतिवर्ष दो से ढ़ाई लाख रूपये तक आमदनी हुई है। राज्यपाल ने कहा कि राज्य में 'नीली क्रांति' योजना लागू करते हुए मछली–उत्पादन में आत्मनिर्भरता हासिल कर ली गई है। राज्य में खाद्य–प्रसंस्करण उद्योग के बढ़ावा के लिए 'प्रधानमंत्री किसान संपदा योजना' शुरू की गई है। उन्होंने कहा कि 'प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना' तो आज किसानों की आय का सुरक्षा–कवच ही है।

आगे पृष्ठ...2 पर

राज्यपाल श्री चौहान ने कहा कि बिहार सरकार ने कृषि–विकास के लिए सार्थक प्रयास किया है। "तीसरे कृषि रोड–मैप" के जरिये समेकित तथा जैविक खेती को बढ़ावा देते हुए राज्य की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान की जा रही है। वर्ष 2017 से 2022 तक पाँच वर्ष की अवधि में "तीसरे कृषि–रोड मैप" के आलोक में कृषि पर 01 लाख 54 हजार करोड़ रूपये व्यय किए जायेंगे। राज्य में जैविक खेती को प्रोत्साहित करने के लिए 'इनपुट अनुदान' की व्यवस्था के साथ–साथ 'जैविक कॉरिडोर' बनाने हेतु भी कार्रवाई की जा रही है। उन्होंने कहा कि जैविक सब्जी की खेती करने के लिए किसानों को बीज एवं जैविक उत्पादन के क्रय हेतु राशि सीधे उनके खातों में 'इनपुट अनुदान कार्यक्रम' के तहत प्रदान की जा रही है। साथ ही सहकारी प्रक्षेत्र का सहयोग लेते हुए सब्जी–संग्रहण, प्रसंस्करण एवं विपणन की त्रिस्तरीय व्यवस्था बहाल की गई है। राज्य में पशु एवं मत्स्य संसाधनों के विकास के जरिये ग्रामीण अर्थ–व्यवस्था को भी सुदृढ़ किया जा रहा है। देशी नस्ल की गायों के जरिये दुग्ध–उत्पादन को बढ़ावा देकर बिहार एवं पूरे देश का आर्थिक सशक्तीकरण हो रहा है। राज्यपाल ने विश्वास व्यक्त किया कि दूसरी "हरित क्रांति" का सर्वाधिक बेहतर परिणाम बिहार में ही देखने को मिलेगा।

कार्यक्रम में स्वागत–भाषण करते हुए बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर के कुलपति डॉ॰ अजय कुमार सिंह ने कहा कि बिहार कृषि विश्वविद्यालय अपनी उपलब्धियों के बल पर राष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त करने में सफल रहा है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान पर विशेष ध्यान दे रहा है।

कार्यक्रम में बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना के कुलपति डॉ॰ रामेश्वर सिंह, राज्यपाल के अपर मुख्य सचिव श्री ब्रजेश मेहरोत्रा, कृषि विभाग के अपर सचिव श्री आर॰एन॰ राय, उद्यान निदेशक श्री नंद कुमार आदि भी उपस्थित थे।

राज्यपाल ने राजभवन में आयोजित 'उद्यान प्रदर्शनी' का परिभ्रमण कर अवलोकन किया तथा फल–फूल, सब्जी, सुगंधित एवं औषधीय पौधों आदि से जुड़े विभिन्न उत्कृष्ट प्रदर्शों को देखा और संबंधित किसानों को प्रोत्साहित किया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राज्य के कृषि मंत्री श्री प्रेम कुमार ने कहा कि राज्य में कृषि के साथ–साथ इसके अनुषंगी क्षेत्रों के विकास हेतु भी 'तृतीय कृषि रोड–मैप' के आलोक में चरणबद्ध प्रयास किये जा रहे हैं। उन्होंने राज्य के 13 जिलों में 'जैविक कैरिडोर' तत्काल स्थापित करने की योजना की जानकारी देते हुए कहा कि जैविक कृषि तथा फल–फूल–सब्जी –उत्पादन के प्रयासों को सरकार भरपूर प्रोत्साहित कर रही है। संबोधन के दौरान मंत्री श्री कुमार ने कृषि–विकास के प्रयासों का विस्तार से उल्लेख किया।

प्रदर्शनी में कुल 7 समूहों –सब्जी, फल, पत्तेदार पौधे (गमले में), मौसमी फूल, मौसमी फूल (डंठल सहित), सुगंधित एवं औषधीय पौधे से जुड़े 884 प्रदर्श शामिल किए गये थे।

प्रदर्शनी में 80 प्रदर्शों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। प्रथम पुरस्कार के रूप में 3000/–रू॰, द्वितीय पुरस्कार के रूप में 2000/– एवं तृतीय पुरस्कार के रूप में 1000/– रूपये प्रदान किये गये।

आगे पृष्ठ...3 पर

निणायकों द्वारा घोषित परिणाम के अनुसार, **सब्जी वर्ग में–** फूलगोभी के लिए श्री अमरजीत कुमार सिंह (पटना), बंदगोभी के लिए श्री राणा संजय सिन्हा (गया), मूली के लिए श्री ओम प्रकाश सिंह (पूर्णिया), गाजर के लिए श्री रामप्रवेश कुमार (मुजफ्फरपुर), बैगन के लिए श्री अमरजीत कुमार सिन्हा (पटना), चेरी टमाटर के लिए श्री संगम कुमार (पटना), मटर की छेमी के लिए श्री सुरेश प्रसाद (मुजफ्फरपुर), मिर्च के लिए श्री राजू रंजन कुमार (मुजफ्फरपुर), कदिमा के लिए श्री सुधीर कुमार (नालंदा), लौकी के लिए श्री रंजीत सिंह (सारण), हल्दी के लिए श्री जितेन्द्र कुशवाहा (पूर्णिया), ओल के लिए श्री राजू रंजन कुमार (मुजफ्फरपुर), ब्रोकली के लिए श्री जय प्रकाश सिंह (पूर्णिया) तथा शिमला मिर्च के लिए श्री राजेश कुमार सिंह (सारण), **फल वर्ग में–** अमरूद के लिए श्री अविनाश कुमार (औरंगाबाद), पपीता के लिए श्रीमती सरीता देवी (भागलपुर), बेर के लिए श्री नवल किशोर सिंह (भागलपुर), पका केला के लिए श्री रामबीर कुमार चौधरी (हाजीपुर), सब्जी केला के लिए श्री सुरेन्द्र राम (नालंदा), नींबू के लिए श्री रघुनन्दन पोद्दार (मधेपुरा) तथा स्ट्राबेरी के लिए श्री धनंजय कुमार (औरंगाबाद), **पत्तेदार पौधे (गमले में) वर्ग में–** क्रोटन एवं पॉम के लिए श्री पवन कुमार सर्राफ (भागलपुर), कैक्टस के लिए श्री चन्द्रशेखर सिंह (भागलपुर) तथा बोनसाई के लिए श्रीमती आशा देवी सर्राफ (भागलपुर), **मौसमी फूल वर्ग में–** ओर्नामेंटल केबेज के लिए श्रीमती आशा देवी सर्राफ (भागलपुर), फ्रेंस गेंदा के लिए श्री कार्यानंद मिश्र (सुपौल), डहेलिया के लिए श्रीमती राधा कुमारी (पटना), कैलेण्डुला के लिए श्री रामवीर कुमार चौधरी (वैशाली), एण्टिरहिनम फूल के लिए श्रीमती आशा देवी सर्राफ (भागलपुर), पैन्जी फूल के लिए श्री राघव कुमार चौधरी (मधुबनी) एवं गमले में फूल के लिए श्री दीपक कुमार चौरसिया (भागलपुर), **मौसमी फूल डंठल सहित वर्ग में–** गुलाब (कलिया) के लिए श्री रनज रंजीत कुमार (पटना), गुलाब के लिए श्री रामवीर कुमार चौधरी (वैशाली), रजनीगंधा के लिए श्री अमित कुमार (भागलपुर), **सुगंधित एवं औषधीय पौधे वर्ग में–** शतावर के लिए श्री शंभू शरण भारतीय (मधेपुरा), एलोवेरा के लिए श्री हरेराम दास (सीवान), जापानी पुदीना के लिए श्री राजेश कुमार चौरसिया (वैशाली) एवं तुलसी पौधे के लिए श्रीमती रेणु देवी (सारण) एवं **माली वर्ग में**– गुलदस्ता के लिए श्री सुरेश प्रसाद (मुजफ्फरपुर), बटन होल के लिए श्री सत्यानन्द जिज्ञासु (मुजफ्फरपुर) एवं माला के लिए श्री महेश्वर साह (मुजफ्फरपुर) को सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शों के साथ प्रदर्शनी में शामिल होने के लिए पुरस्कार प्रदान किए गये। कार्यक्रम में धन्यवाद–ज्ञापन डॉ॰ फिजा अहमद ने किया।

प्रदर्शनी में 414 किसानों ने भाग लिया, जबकि ऑनलाईन रजिस्ट्रेशन के जरिये लगभग 200 दर्शनार्थियों ने भी इस दो दिवसीय 'उद्यान प्रदर्शनी' का अवलोकन राजभवन पहुँचकर किया।

.....